स्वतंत्रता आन्दोलन में चतरा जिला की भूमिका

अजीत कुमार सिंह
शोधार्थी
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग)
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग (झारखण्ड)

डॉ० प्रमोद कुमार
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग (झारखण्ड)

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन का एक महत्वपूर्ण चरण, भारतीय राजनीति में महात्मा गाँधी के पदार्पण के साथ प्रारम्भ होता है । 1919 ई० में हुए जालियाँवाला बाग हत्याकांड के बाद महात्मा गाँधी असहयोगी बन गए। जब गाँधी जी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन प्रारंभ हुआ तो उनके आह्वान पर स्कूल, कॉलेज के अध्यापक, विद्यार्थी, वकील, बुद्धिजीवी तथा स्वतंत्रता सेनानी आन्दोलन में कूद पड़े । कांग्रेस को एक जन आन्दोलन का रूप मिलता गया । कांग्रेस के नेतृत्व में जो आन्दोलन चलाया जा रहा था उसका मुख्य उद्देश्य राजनीतिक था । ब्रिटिश सरकार के कठोर दमन तथा पुलिस की सख्त निषेधाज्ञा के बावजूद जान हथेली पर लेकर स्वतंत्रता सेनानियों ने अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ संघर्ष का बिगूल फूँका। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में जो जन आन्दोलन चल रहा था उसका प्रभाव देश के कोने–कोने यहाँ तक की दुर्गम जंगलों एवम् पहाड़ों के कोने में भी पड़ा । वहाँ के शिक्षित, प्रबुद्ध एवम् संवेदनशील स्वतंत्रता प्रेमियों ने शासन के विरूद्ध अपनी आवाज बुलंद की ।

स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में तत्कालीन बिहार के छोटानागपुर का क्षेत्र पिछली सदी के अंतिम वर्ष में झारखण्ड राज्य के नाम से स्वतंत्रत अस्तित्व में आया, एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है । वर्तमान झारखण्ड राज्य के अनेक वीर सपूतों के रक्त से भारतीय स्वाधीनता संग्राम के पन्ने रंगे हुए मिलते हैं । राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन का प्रचार–प्रसार प्रांतीय स्तर पर भी हो चुका था । झारखण्ड में भी (तत्कालीन बिहार प्रान्त) अंग्रजो के खिलाफ जोर–शोर से आन्दोलन चलाए जा रहे थे । एक ओर जहाँ आन्दोलन अपने चरम पर था वहीं दूसरी ओर ब्रिटिश हुकूमत द्वारा इनके विरूद्ध दमनात्मक कार्यवाही की जा रही थी ।

इतिहास के आइने में देखें तो 1771–1780 तक छोटानागपुर कमिश्नरी का प्रशासनिक मुख्यालय चतरा था। जहाँ आधुनिक भारत के जनक एवम् समाज सुधारक राजा राम मोहन राय ने डिप्टी रजिस्ट्रार के रूप में काम किया । 1914 में चतरा हजारीबाग जिला का अनुमण्डल बना तथा इसके प्रथम अनुमण्डल पदाधिकारी एच० डब्लू० विलियम्स थे । मुस्लिम इतिहासकार सम्पूर्ण छोटानागपुर को वन प्रान्त के नाम से जानते थे । आइने–अकबरी से ज्ञात होता है कि छोटानागपुर अथवा कोकरह प्रदेश सूबे बिहार में अकबर के आगमन के साथ 1566 ई० में सम्मिलित कर लिया गया । 1605 में इब्राहिम खाँ फतेह जंग ने चढ़ाई की तथा छोटानागपुर के 46वें राजा दुर्जनशाल को परास्त कर बन्दी बना लिया । 1660 ई० में मुगल सूबेदार दाउद खाँ ने कुन्दा के किले पर अधिकार कर लिया । दाउद खाँ ने राम सिंह को 1669 ई० में थानेदारी जागीर से पुरस्कृत किया । उस समय रामगढ़, कुन्दा, केंडी और खडगडीहा राज्य थे ।

झारखण्ड के चतरा जिले की पवित्र धरती 1857 के उस युद्ध का भी साक्षी रहा, जिसे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में 'सिपाही विद्रोह' की संज्ञा दी गई है । चतरा उपकारा के जिस स्थल के समीप भारत माँ के वीर सपूतों ने फिरंगी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए थे, उसे शहर में 'फाँसी' 'फाँसीहारी' तथा 'भूतहा तालाब' के नाम से जाना जाता है । बात 11 सितम्बर 1857 की है जब रामगढ़ छावनी के विद्राही सैनिक सुबेदार जयमंगल पाण्डे तथा नादीर

अली के नेतृत्व में जगदीशपुर के लिए रवाना हुए थे । इसी क्रम में वे कुडू, चंदवा और बालूमाथ के रास्ते चतरा शहर पहुँचे । उस समय चतरा का डिप्टी कमिश्नर सिम्पसन हुआ करता था । विद्रोही सैनिकों को चतरा से आगे नहीं बढ़ने देने के इरादे से उसने छोटानागपुर के तत्कालीन कमिश्नर डाल्टन से सैनिक सहायता माँगी । मेजर इंगलिश के नेतृत्व में 320 सैनिकों की टुकड़ी मँगवा ली गई । दूसरी ओर विद्रोही सैनिकों की संस्था 3000 के आसपास थी । 02 अक्टूबर 1857 को विद्रोहियों के नायक जयमंगल पाण्डे तथा नादिर अली को गिरफ्तार कर लिया गया और 04 अक्टूबर 1857 को उन्हें तालाब के किनारे आम के पेड पर लटका कर फाँसी दे दी गई । आज भी मौन आम का वृक्ष भारत के वीर सपूतों के शौर्य, पराक्रम और वीरता का चश्मदीद गवाह है।

चतरा जिले का स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। यहाँ का स्वाधीनता आन्दोलन एक सामूहिक जनक्रांति थी । इस आन्दोलन में पूरे चतरा जात–पात के बंधन को तोड़ सिर्फ एक हिन्दुस्तानी बनकर लड़ा था । जिसमें सुलगी के लाल और बाबू कुँअर सिंह के दामाद लाल जगत पाल सिंह भी शामिल हुए थे । देश की आजादी के लिए चतरा के लोगों ने अनेकों कुर्बानियाँ दी थी । महात्मा गाँधी के नेतृत्व में संचालित स्वतंत्रता आन्दोलन का प्रभाव चतरा जिले के स्वतंत्रता सेनानियों में प्रमुख रूप से बाबू रामनारायण सिंह, कृष्ण बल्लभ सहाय, बाबू शालीग्राम सिंह, दीपनारायण सिंह, सुखलाल सिंह, सीताराम दुबे, रामप्रसाद दुबे आदि पर पडा तथा इन्होंने बढ़–चढ़कर भाग लिया । 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन पूरे देश में अपने सवाब पर था। इस आन्दोलन को चतरा में फैलाने में इन स्वतंत्रता सेनानियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा ।

चतरा जिले के स्वतंत्रता सेनानियों में बाबू रामनारायण का नाम बडे ही आदर से लिया जाता है। रामनारायण सिंह का जन्म चतरा जिले के तेतरिया नामक गाँव में 19 दिसम्बर 1885 को हुआ । इनकी प्राथमिक शिक्षा हंटरगंज से तथा उच्च शिक्षा हेतु कलकता गए । संत जेवियर कॉलेज से आई०ए० की परीक्षा पास की । पटना से इन्होंने कानून की पढ़ाई पूरी की तथा पटना में ही वकालत शुरू की । 1919 में जालियाँवाला बाग हत्याकांड से देशवासियों में गुस्सा था तथा अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ बिगुल फूँकना समय की माँग थी । 1920 में महात्मा गाँधी के आह्वान के बाद बाबू रामनारायण सिंह ने भी वकालत छोड़ कर स्वतंत्रता की लड़ाई में कूद पड़े । स्वतंत्रता संग्राम में इन्हें कई यातनाएँ झेलनी पड़ी । 1931 से 1947 तक इन्हें आठ बार जेल जाना पड़ा । जेल में उन्हें बेडियों से बाँधकर रखा गया । स्वतंत्रता सेनानी रामनारायण सिंह न सिर्फ राजनीतिक नेता थे अपितु विचारक, समाज सुधारक के रूप में पूरे देश में अपनी एक विशेष पहचान बनाई थी । संविधान सभा के सदस्य के रूप में पंचायती राज की वकालत कर महात्मा गाँधी के कथन को चरितार्थ करने की कोशिश की थी । लोकसभा सदस्य के रूप में अपनी स्पष्टवादिता के लिए प्रसिद्ध थे । बाबू रामनारायण सिंह ने अपने प्रारंभिक राजनीतिक जीवन कांग्रेस से प्रारंभ की लेकिन चतरा की स्थानीय कांग्रेस कमिटि की कार्यप्रणाली से दुःखी होकर कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया और रामगढ़ राजा कामाख्या नारायण सिंह की जनता पार्टी से चुनाव लड़े और इन्हें हजारीबाग पश्चिम संसदीय क्षेत्र के पहले (1952) निर्वाचित सांसद बनने का गौरव प्राप्त हुआ । 1942 में रामगढ़ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की 53वीं वार्षिक सभा का आयोजन किया गया था । डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने अपना स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए रामनारायण सिंह को 'छोटानागपुर केसरी' की उपाधि से अलंकृत किया था ।

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में पूरे देश में जो आन्दोलन चलाए जा रहे थे उसका बहुत ही सकारात्मक प्रभाव चतरा जिले पर पड़ा एवम् यहाँ के स्वतंत्रता सेनानियों ने आजादी प्राप्त करने के लिए अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ी । 24 अगस्त 1942 को बाबू शालीग्राम सिंह जब एक जुलूस के साथ तिरंगा झण्डा फहराने के लिए चतरा कोर्ट जा रहे थे तो उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर हजारीबाग सेंट्रल जेल भेज दिया । 7 नवम्बर 1942 को जयप्रकाश नारायण रसियन

रेव्यूलुशन डे (Russian Revolution Day) मना रहे थे, इस सभा में जयप्रकाश नारायण के साथ–साथ भारतीय स्तर के स्वतंत्रता सेनानी भी थे । सभा के बाद जयप्रकाश नारायण ने शालीग्राम बाबू को अलग से मिलने को कहा । उस सभा में शालीग्राम सिंह के अलावे पंडित रामानंद मिश्रा, योगेन्द्र शुक्ल तथा रामवृक्ष बेनीपुरी भी शामिल थे ।

9 नवम्बर 1942 को जब देश में दीवाली मनाई जा रही थी ऐसे समय में हजारीबाग सेन्ट्रल जेल से जयप्रकाश नारायण, बाबू शालीग्राम सिंह, योगेन्द्र शुक्ल, रामानंद मिश्र, सूरज नारायण सिंह तथा गुलाबी सोनार पूर्व नियोजित योजनानुसार सेन्ट्रल जेल की चारदीवारी को पार कर टटरा (चतरा का गाँव) पहुँचे, तत्पश्चात् शेरघाटी होते हुए वाराणसी पहुँचे और फिर वहाँ से नेपाल पहुँच कर अंग्रेजों के विरूद्ध आन्दोलन का संचालन किया ।

स्वतंत्रता सेनानी बाबू सुखलाल सिंह का जन्म 3 जनवरी 1897 में हंटरगंज के तेतरिया गाँव में हुआ था तथा प्राथमिक शिक्षा ठिकरिया लोवर प्राइमरी स्कूल से हुई थी। झारखण्ड की धरती के लाल बाबू सुखलाल सिंह की स्वतंत्रता सेनानी के रूप में अलग पहचान थी। 26 जनवरी 1929 को जब पूरे देश में स्वतंत्रता दिवस का संकल्प दिवस के रूप में मनाया जा रहा था तो उस समय केन्द्रीय कारागार में इन्हें कैद कर रखा गया था जिन्हें 1932 में रिहा किया गया। वे स्वतंत्रता सेनानी बाबू रामनारायण सिंह के अनुज थे। उनका प्रथम लक्ष्य देश की आजादी था और यही कारण है कि बी. एन. कॉलेज की पढ़ाई को अधूरा छोड कर स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पडे।

रामेश्वर प्रसाद ऊर्फ रामबाबू का स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। आज वे हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी स्मृति कभी समाप्त नहीं हो सकती क्योंकि वे बहुआयामी व्यक्तित्व के स्वामी थे। इनका जन्म 22 जुलाई 1919 को पटना के शेखपुरा नामक स्थान पर हुआ था। 1942 के भारत छोडो आन्दोलन में कचहरी में झंडा फहराने के जुर्म में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था, लेकिन कम उम्र होने की वजह से बाद में रिहा कर दिया गया। इतिहासकार के.के. दत्त की पुस्तक 'फ्रीडम मूवमेंट इन बिहार' में इसका उल्लेख है।

स्वतंत्रता सेनानी मोतीराम का जन्म 1907 में इचाक प्रखण्ड के करियातपुर नामक गाँव में हआ था। इन्होंने अपने करियर की शुरूआत शिक्षक के रूप में की लेकिन 1920–21 के असहयोग आंदोलन के समय इन्होंने अपनी नौकरी से इस्तीफा दिया एवम् स्वतंत्रता के आंदोलन मे कूद पडे। इन्हें 1921 तथा 1930–31 में गिरफ्तार कर पटना जेल तथा हजारीबाग जेल में रखा गया था।

स्वतंत्रता आन्दोलन में झारखण्ड के स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता । इनके त्याग और माँ भारती को स्वतंत्र कराने के लिए कुछ कर गुजरने की तमन्ना के कारण ही 15 अगस्त 1947 को हमारे देश ने अंग्रेजों की दासता से स्वतंत्रता प्राप्त की । चतरा जिले के सच्चे वीर सपूतों ने अपनी चेतना, बुद्धि और साहस से आजादी के लिए मार्ग प्रशस्त करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की । देश को स्वतंत्र कराने वालों का जब–जब नाम आएगा, चतरा के इन वीर सपूतों को बड़े ही सम्मान के साथ याद किया जाएगा।

Key Word :- **स्वतंत्रता आंदोलन और चतरा**

संदर्भ सूची :–

1. आज का भारत, रजनी पामदत्त, मैकमिलन इण्डिया
2. झारखण्ड की रूप रेखा, डॉ० रामकुमार तिवारी, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना,2019
3. छोटानागपुर का संक्षिप्त इतिहास, सिन्हा प्रेस, राँची
4. स्वराज लुट गया, बाबू रामनारायण सिंह, दिल्ली, 1956

5. कहानी झारखण्ड आंदोलन की बलबीर दत्त, क्राउन पब्लिकेशन्स, 2014
6. बिहार में राष्ट्रीयता का विकास एन०एम०पी० श्रीवास्तव, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
7. बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास(खंड–3) – के.के. दत्त, 2014, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
8. इण्डियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, जुलाई 1994
9. आत्मकथा – डॉ राजेन्द्र प्रसाद
10. धर्मयुग – 1977, 1986
11. भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, ए. आर. देसाई, मैकमिलन इण्डिया
12. आदिवासी अस्तित्व और झारखण्डी अस्मिता के सवाल, डॉ रामदयाल मुण्डा, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
13. स्वतंत्रता आंदोलन की बिखरो कड़िया, प्रभुनारायण विद्यार्थी
14. बिहार में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद, विपन चन्द्र, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली
15. लोकतंत्र के सात अध्याय, सं. योगेन्द्र यादव, सी. एस. डी. एस के लिए वाणी प्रकाशन दिल्ली द्वारा प्रकाशित।